सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला का द्वितीय पुष्प

सञ्जीवनी

वंशी बजे स्वराज्य की होने घर घर गान दो।
जय जय भारत की कहो और छेड़ यह तान दो ॥

सम्पादक —

'सनेही'।